प्रातःक्लास 27/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। इनको रूहानी बाप नहीं कहेंगे। आज के दिन को सतगुरुवार कहते हैं। गुरुवार कहना भूल है। सतगुरुवार। गुरुलोग तो बहुत ही ढेर हैं। सतगुरु एक ही है। बहुत हैं जो अपन को गुरु भी कहते हैं। सद्गुरु भी कहते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो गुरु और सद्गुरु में तो फ़र्क है। सत्य माना सत्य। सच्चा एक ही निराकार बाप को कहा जाता है। न कि मनुष्य को। मनुष्य लोग तो जो बोलते हैं झूठ ही बोलते हैं। यह दुनियां ही झूठी है। भल कितना भी बड़ा गवर्नर है, राजा–रजवारा(ड़ा) है; परंतु ज्ञान के बारे में जो कुछ बोलते हैं वह सभी झूठ ही बोलते हैं। सच्चा ज्ञान तो एक ही बार ज्ञान सागर बाप देते हैं। मनुष्य मनुष्य को कब ज्ञान दे न सके। सच्चा है ही एक बाप। उनका नाम ब्रह्मा है। यह कब किसको ज्ञान दे न सके। ब्रह्मा में ज्ञान कुछ भी नहीं था। अभी भी कहेंगे इनमें ज्ञान नहीं है। सम्पूर्ण पूरा ज्ञान तो ज्ञान सगर परमपिता परमात्मा में ही है। अभी ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो अपन को सतगुरु कहला सके सद्गुरु भी ना एपस्युलिटली सत्य। तुम सत्य बन जावेंगे तो फिर यह शरीर न रहेगा। मनुष्य को कब सतगुरु कह नहीं सकते। मनुष्यों में तो पाई की भी ताकत नहीं है। यह भी (बाबा) मनुष्य बैठा है ना। इनमें कुछ भी ताकत नहीं। यह खुद भी कहते हैं मैं तुम्हारे जैसा मनुष्य हूँ। मैं भी पढ़ता हूँ। इसमें ताकत की बात उठ नहीं सकती। यह तो बाप पढ़ाते हैं। न कि ब्रह्मा। यह ब्रह्मा भी उनसे पढ़कर फिर पढ़ाते हैं। तुम ब्रह्माकुमार–कुमारियां कहलाने वाले भी परमपिता परमात्मा सद्गुरु से पढ़ते हैं। तुमको उनसे ताकत मिलती है। ताकत का मतलब यह नहीं कि कोई को घूसा मारो जो गिर पड़े। ताकत की और कोई बात ही नहीं। यह है रूहानी बात। याद के बल से तुम शांति को पाते हो और पढ़ाई से तुमको सुख मिलता है। जैसे और टीचर्स तुमको पढ़ाते हैं वैसे बाप भी पढ़ाते हैं। यह भी पढ़ते हैं। स्टूडेन्ट है। देहधारी जो भी है वे सभी स्टूडेन्ट् हैं। बाप को तो देह नहीं है। वह है निराकार। वही आकर पढ़ाते हैं। जैसे और स्टूडेन्ट्स पढ़ते हैं वैसे तुम भी पढ़ते हो। इसमें मेहनत की बात ही नहीं। पढ़ने समय हमेशा ब्रह्मचर्य में रहते हैं। ब्रह्मचर्य में पढ़कर जब पूरा करें तब बाद में विकार में पड़ते हैं। मनुष्य तो मनुष्य जैसे ही देखने में आते हैं। कहेंगे यह फलाना आदमी है। यह एल.एल.बी. है यह एम.एल.ए. है। पढ़ाई प्रैक्टिकल मिल जाती है। सिकल तो वही है। उस जिस्मानी पढ़ाई को तो तुम जातने हो। साधु–संत आदि जो भी शास्त्र पढ़ते हैं, पढ़ाते हैं उनमें कोई भी बड़ाई नहीं। उससे कोई को शांति मिल नहीं सकती। खुद भी शांति के लिए धक्का खाते हैं। जंगल में अगर शांति होती (तो) फिर वापस क्यों लौटते। मुक्ति को तो कोई पाता ही नहीं। जो भी अच्छे–2 नामी–ग्रामी कृष्ण परमहंस आदि होकर गये हैं वह भी सभी पुनर्जन्म लेते–2 नीचे ही आये हैं। मुक्ति–जीवनमुक्ति को कोई भी पाते नहीं। तमोप्रधान ही बनना है। देखने में तो कुछ भी नहीं आता। मनुष्य ही मनुष्य हैं। कोई से भी पूछो तुमको क्या मिलता है गुरु से? कहेंगे थोड़ी शांति मिलती है; परंतु मिलता कुछ भी नहीं है। शांति का अर्थ ही नहीं जानते। अभी तुम बाबा ज्ञान का सागर है और कोई साधु–संत गुरु आदि शांति के सागर हैं नहीं। शांति कोई दे न सके। मनुष्य किसको शांति दे न सके। तुम बच्चों को तो पहले–2 यह निश्चय करना है। शांति का सागर बाप है जो हमको पढ़ाते हैं। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है वह भी बाप ने समझाया है। शांति के सागर ही तो शांति देंगे ना। मनुष्य मनुष्य को कुछ भी सुख वा शांति दे न सके। बाप से तुम बच्चों को ही यह पढ़ाई मिलती है। यह है उनका रथ। तुम्हारे जैसा ही स्टूडेन्ट है। यह भी गृहस्थ व्यवहार में रहने वाला था। सिर्फ़ बाप को लोन दिया है। सो भी वानप्रस्थ अवस्था में। तुमको कहते हैं इसने खुद तो बहुत ही विकार के सुख देखें हैं बूढ़ा हुआ तो कहते हैं यह छोड़ो। अरे; परंतु यह थोड़े ही समझाते हैं। तुमको समझाने वाला तो वही बाप है ना। वही बाप कहते हैं सभी को निर्विकारी बनना है। जो खुद नहीं बन सकते हैं तो फिर अनेक प्रकार की बातें करेंगे। गालियां भी देंगे। समझते हैं हमारा जन्म–जन्मांतर का मूत तो बाप का वर्सा मिला है वह छुड़ाते है। अभी

छुड़ाता तो वह बेहद का बाप है ना। इनको भी उसने ही छुड़ाया। यह भी तो विकारी थे ना। इतने बच्चे तब कहां से निकाले। आसमान से निकले क्या? बच्चों को भी बचाने की कोशिश की। जो निकल सके उनको निकाला। तो अभी तुम बच्चों को पढ़ाने वाला कोई मनुष्य नहीं है। कहते हैं इसमें महान ताकत है। बाबा कहते हैं हमारे में कुछ भी ताकत नहीं है। झूठ बोलते हो। सर्वशक्तिवान तो एक ही निराकार बाप को कहा जाता है और किसको भी नहीं कहा जाता। मैं सर्वशक्तिवान नहीं हूँ। नहीं हूँ। सर्वशक्तिवान बाप ही है। वही तुमको नॉलेज दे रहे हैं। बाप ही समझाते हैं यह विकार ही तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन है। इनको छोड़ो। फिर जो नहीं छोड़ सकते तो कितना उस पर झगड़ा होता है। माईयां भी कोई–2 ऐसी निकल पड़ती हैं जो विकार के लिए हंगामा करती हैं। उनके लिए नाम है शूर्पणखा, पूतना। यह असुरों के नाम हैं। इस समय है ही आसुरी सम्प्रदाय। अभी तुम हो संगमयुग पर। आसुरी सम्प्रदाय यह भी नहीं जानते कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। बाप कितना अच्छी रीत बैठ समझाते हैं। बहुत हैं जिनको तो निश्चय पूरा है। कोई को सेमी निश्चय है। कोई को 100%, कोई को 80%, कोई को 60%, कोई को 5%, कोई को 1% ऐसे भी हैं। अभी भगवान श्रीमत देते हैं। बच्चे मुझे याद करो। यह है बाप का बड़ा फरमान। निश्चय हो तब तो उस फरमान पर भी चले। बाप कहते हैं, हे मीठे बच्चों तुम अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। इनको याद नहीं करना है। मैं नहीं कहता। बाबा मेरे द्वारा तुमको कहते हैं। जैसे तुम बच्चे पढ़ते हो। वह भी पढ़ता है। सभी स्टूडेन्ट्स हैं। पढ़ाने वाला एक ही टीचर है। वह सभी मनुष्य पढ़ा(ते) हैं। यहां तुमको ईश्वर पढ़ाते हैं। तुम आत्माएं पढ़ते हो। तुम्हारी आत्मा फिर पढ़ा... है। इसमें आत्माभिमानी बहुत–2 बनना है। बैरिस्टर, इंजीनियर आदि आत्मा ही बनती है। आत्मा को अभी देह अभिमान आ गया है। आत्मा अभिमान बदली देह अभिमानी बन पड़ी है। जब आत्माभिमानी हो तब तो विकारी नहीं कहला सकते। उनको कब विकार का ख़्याल भी नहीं आवेगा। देह अभिमान से ही विकार का ख़्याल आता है। मैं विकार कर; क्योंकि विकारी हैं तो विकार की ही दृष्टि से देखते हैं। देवताओं की कब विकार की दृष्टि नहीं हो सकती। ज्ञान से फिर दृष्टि तो बदल जाती है सतयुग में। ऐसे थोड़े ही प्यार नहीं करेंगे। डांस करेंगे, भाकी आदि पहनेंगे, प्यार करेंगे; परंतु विकार की बास नहीं। जन्म–जन्मांतर विकार में गये तो वह नशा बहुत मुश्किलात निकलती है। बाप निर्विकारी बनाते हैं। कई बच्चियां पूरा निश्चय कर लेती हैं बस हमको तो पूरा निर्विकारी बनना है। हम अकेले थे। अकेले ही जाना है। उनको कोई थोड़ा टच करेंगे तो भी अच्छा न लगेगा। कहेंगे यह हमको क्यों हाथ लगाते हैं। इनमें विकार की बास है। विकारी हमको टच न करे। इस मंज़िल पर पहुँचना है। अभी कोई पहुँचा नहीं है। यह भी कहता है मैं नहीं पहुँचा हूँ। अभी टाइम पड़ा है। देह तरफ बिल्कुल दृष्टि ही न रहे। वह कर्मातीत अवस्था पिछाड़ी में होगी। अभी ऐसा नहीं है कि सिर्फ़ आत्मा को ही देखते हैं। मंज़िल है। अभी तो भाकी पहनते हैं तो भी कहता हूँ, शिवबाबा को याद कर भाकी नहीं पहनते हो तो तुम व्यभिचारी ठहरे। इनको भाकी की दरकार ही नहीं। यह शरीर तो भाकी आदि से तं(ग) हो जाते हैं हो जाती है। अभी तो बच्चे थोड़े हैं। ढेर बच्चे हो जावेंगे कहां तक भाकी पहनेंगे। यह सभी बंद हो जावेगा। दरकार ही नहीं। आधा कल्प से हिरे हुये हैं। भक्ति मार्ग में आवाज़ है ना। तुम ही से बैठूँ, तुम्हीं से खाऊँ तो वह आवाज़ पकड़ लिया है। इस भाकी के कारण ही कितना नाम बदनाम हुआ है। आर्यसमाजी कितने दुश्मन हैं। समझते हैं शिव तो है निराकार। उनको तो भाकी की दरकार ही नहीं। उनको तो शरीर ही नहीं है। यह क्यों भाकी पहनते हैं। ऐसे बहुत आते हैं स्त्री ज्ञान में है पुरुष नहीं है, तो स्त्री को भाकी पहनता हुआ देख पुरुष लोग जलने लग पड़ते हैं। फिर उनको बाबा कह देते भाकी न पहनो। तुम्हारे पति को निश्चय नहीं है। 10% निश्चय कोई को है जो बने हैं। फिर भी बाप के श्रीमत पर चल नहीं सकते हैं। बाप हमेशा कहते हैं बच्चे अपन को आत्मा समझो। शरीर यह दम्ब(दुम्ब) है जिससे तुम पार्ट बजाते हो। कई कहते हैं इनमें शक्ति है; परंतु इसमें तो शक्ति की कोई बात ही नहीं। यह तो पढ़ाई है ना। .....

जैसे और पढ़ते हैं वैसे यह भी पढ़ते हैं। पवित्रता के लिए कितना माथा मारते हैं। बड़ी मेहनत है; इसलिए बाप कहते हैं एक/दो आत्मा ही देखो। सतयुग में भी तुम आत्माभिमानी रहते हो। वहां तो रावण राज्य है नहीं। विकार की बात ही नहीं। यहां रावण राज्य में सभी विकारी हैं; इसलिए बाप आकर निर्विकारी बनाते हैं। न बनेंगे तो सज़ा खानी पड़ेगी। आत्मा पवित्र बनने बिगर ऊपर जा न सके। हिसाब–किताब चुक्तू करना होता है। फिर पद भी कम हो जाता। यह राजधानी स्थापन हो रही है ना। बच्चे जानते हैं स्वर्ग़ में एक आदि सनातन देवी–देवताओं का राज्य था। पहले–2 तो ज़रूर एक राजा–रानी ही होगा ना। फिर उनके बच्चे बड़े होंगे, वृद्धि को पावेंगे। पहले–2 तो एक ही होगा। एक ही डिनायस्टी होगी। यह तो ज़रूर है प्रजा ढेर बनती है। उसमें अवस्थाओं में फ़र्क पड़ेगा। जिनको पूरा निश्चय ही नहीं वह इतना पढ़ भी न सक। पवित्र भी बन न सके। आधा कल्प के पतित एक जन्म में 21 जन्मों लिए पावन बने, मासी का घर है क्या। मुख्य है ही काम की बात। क्रोध आदि का इतना हर्जा नहीं है। बच्चे आदि गिर पड़ते हैं तो ज़रूर बाप को याद नहीं करते हैं। बाप की याद पक्की हो जावेगी फिर और तरफ कोई बुद्धि नहीं जावेगी। बहुत ही ऊँच मंज़िल है। पवत्रिता की बात सुनकर ही आग में जल मरते हैं। कहते हैं यह बात तो कब कोई ने कहीं नहीं। कोई शास्त्र में नहीं। बड़ा ही मुश्किल समझते हैं। वह तो है ही निवृत्ति मार्ग का धर्म अलग। उनको तो पुनर्जन्म ले फिर सन्यास धर्म में ही जाना है। वही संस्कार ले जाते हैं। तुमको तो घर–बार छोड़ना नहीं है। समझाया जाता है भल घर में रहो। उन्हों को भी समझाओ। अभी है संगमयुग। पवित्र बनने बिगर सतयुग में देवता बन न सके। थोड़ा भी ज्ञान सुनते हैं तो स्वर्ग़ में आ जाते हैं। प्रजा तो ढेर होती है ना। सतयुग में वज़ीर भी होते नहीं; क्योंकि बाप सम्पूर्ण नया बना देते हैं। वज़ीर आदि चाहिए अज्ञानियों को। कोई पी.ए. मांगते हैं तो कोई क्यां मांगते हैं। वह क्या कहते हैं? शरीर की सम्भाल करते हैं। एक/दो को मारते कैसे हैं। दुश्मनी का स्वभाव कितना कड़ा है। अभी तुम बच्चे समझते हो हम यह पुराना घर छोड़, जाकर दूसरा लेते हैं। कोई बड़ी बात है क्या। वह दुःख से मरते हैं। तुमको बहुत ही सुख से बाप की याद में जाना है। जितना मुझ बाप को याद करेंगे तो और सभी कुछ भूल जावेंगे। कोई भी याद न रहेगा; परंतु यह अवस्था तब हो जब उनका निश्चय हो। निश्चय नहीं तो ज़रा भी याद ठहर न सके। नाम मात्र सिर्फ़ कहते हैं निश्चय है, नहीं तो याद काहे को करेंगे। सभी को एक जैसा निश्चय तो नहीं है ना। माया निश्चय से भी हटा देती है। जैसे के वैसे बन जाते हैं। पहले–2 तो निश्चय चाहिए। बाप में संशय होगा क्या कि यह हमारा बाप नहीं है। बेहद का बाप ही ज्ञान देते हैं ना। यह तो कहते हैं मैं भी सृष्टि के रचयिता और रचना को नहीं जानता था। मेरे को कोई तो सुनावेंगे ना। मेंने 12 गुरु किये। उन सभी को छोड़ना पड़ा। गुरु ने तो ज्ञान दिया नहीं। सद्गुरु ने अचानक आकर प्रवेश किया। समझा पता नहीं क्या होने का है। गीता में भी है ना अर्जुन को सा. कराया। तो ज़रूर उनको निश्चय बैठा होगा। अर्जुन की बात है नहीं। यह तो रथ है ना। उन्होंने फिर अर्जुन भी रथ में बिठाये दिया है। कृष्ण को भी रथ में बिठाया है। अर्जुन को कृष्ण ने ज्ञान दिया। है तो कुछ भी नहीं। बाप समझाते हैं बच्चे गीता भी झूठी है। यह भी पढ़ा था ना। बाप ने प्रवेश किया। सा. भी किया। यह तो बाप ही ज्ञान देने वाला है। कृष्ण की गीता तो है नहीं। यह तो झूठ हो गई तो इस गु(स्)से में गीता को फेंक दिया। बाप ज्ञान का सागर है हमको तो वही यह बनावेंगे ना। बस उस समय गु(स्)सा चढ़ा। अभी तुम समझते हो गीता झूठी, तो सभी शास्त्र झूठे। गीता है माई–बाप। वह बाप ही है जिसको त्वमेव माताश्चपिता..... कहते हैं। वह रचना रचते हैं, एडॉप्ट करते हैं ना। यह भी तुम्हारे जैसा है। बाप कहते हैं इनकी भी वानप्रस्थ अवस्था होती है। तब मैं प्रवेश करता हूँ। कुमारी तो है ही पवित्र। उनके लिए सहज है। शादी के बाद कितने सम्बंध बन जाते हैं; इसलिए देही अभिमानी बनने में मेहनत लगती है। वास्तव में आत्मा शरीर से अलग है; परंतु आधा कल्प देह अभिमानी रहे हैं। बाप आकर अंतिम

जन्म में देही अभिमानी बनाते हैं। तो मुश्किल भासता है। पुरुषार्थ करते हैं कितने थोड़े पास होते हैं। आठ रत्न निकलते हैं। कितनी मेहनत है। अपने से पूछो हमारी लाइन क्लीयर है? एक बाप के सिवाय और कुछ याद तो नहीं आता? यह अवस्था होगी पिछाड़ी में। अभी तो बहुत ही देहअभिमान में रहते हैं। आत्माभिमानी बनने में बहुत–2 मेहनत है। देह अभिमान के कारण की(ही) लटकते–चटकते हैं। जो अच्छी, पक्की बच्चियां हैं वह तो समझती हैं हमको कोई हाथ भी न लगावे। पतित ख़्यालात वाला होगा तो उसी ख़्याल से हाथ लगावेंगे। तो समझती हैं ऐसा कब टच भी न करे। हम आत्मा हैं, शिवबाबा के हैं। इसको कोई टच भी न करे। ऐसे बहुत कड़े होते हैं। समझना चाहिए इनको शिवबाबा से स्नेह है। विकार के कारण ही अबलाएं कितनी मार खाती हैं। कोई फिर शूर्पणखा, पूतनाएं भी निकलती हैं। तो वह भी बड़ा तंग करती हैं। अनुभवी तो बाबा है ना। यह है ही वैश्यालय। अभी बाप तुम बच्चों को शिवालय में ले जाते हैं; परंतु जब वैश्यालय से दिल टूटे ना। यह तो ज़रा भी ख़्यालात न आना चाहिए। तब ही ऊँच पद पा सकते हैं। ड्रामा अनुसार जिन्होंने कल्प पहले पद पाया है उन्हों का पुरुषार्थ भी ऐसे ही देखने में आता है। बाप बैठ समझाते हैं हमने यह रथ कैसा लिया है। पहले तो यह निश्चय चाहिए। निश्चय हो तो उनकी चलन बड़ी अच्छी चले। बहुतों को निश्चय नहीं होता तो फिर टूट पड़ते हैं। जैसे बेताले हो बैठते हैं। यहां बैठे भी कहां–2 बुद्धि जाती रहती है; क्योंकि पक्का निश्चय नहीं। निश्चय बुद्धि तो बड़ा ही अटेन्शन से सुनेंगे। निश्चय बुद्धि बिगर पढ़ाई पढ़ न सके। शिवबाबा में निश्चय हो तब दिल से लगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है। कोई–2 का तो बहुत ही लव है। कहते हैं यहां ही रह जावें और भी तो इतने सभी रहते हैं; परंतु नहीं। उन्हों के साथ तुम रीस क्यों करते हो। बाप कहते हैं नहीं रहना है। अनेक प्रकार के आते हैं। कोई तो ऐसे भी समझते किसकी खातरी होती है। किसको आम मिलता है। किसको नहीं मिलता है। भगवान की तो सम भावना होती है। यह भगवान तो हो नहीं सकता। ऐसे भी संशय बुद्धि होकर चले गये। अच्छा फिर दो–तीन वर्ष (में) आ जाते हैं, पुरुषार्थ में लग पड़ते हैं। फिर वह बातें भूल जाते हैं। बाप जानते हैं जिनके तकदीर में वह तो अवश्य आवेंगे ही। अवस्थाएं तो नीचे–ऊपर तो होती ही रहती हैं। नई बात नहीं। कल्प पहले भी ऐसे हुआ होगा। फिर ऐसे ही होगा। बाप ने समझाया है मैंने इनके बहुत जन्मों के अंत के जन्म में प्रवेश किया है। जबकि तमोप्रधान हैं। यह अपन को भगवान तो कहते नहीं हैं। पढ़ाने वाला वह बाप ही है। उनको ईश्वरीय पढ़ाई कहा जाता है। जो पढ़ते हैं वही देवता बनते हैं। बाकी तो सभी जैसे जट। देवताओं के आगे जाकर उनकी महिमा गाते हैं। आप सर्व गुण सम्पन्न..... मैं विका(री), पापी, चर्या–खर्चा हूँ। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको ऐसा बनाता हूँ। तो श्रीमत पर चलो। यह तो जानते हैं कल्प पहले जैसे राजधानी स्थापन हुई है। अभी भी होगी। तुम भी पुरुषार्थी हो। यह भी पुरुषार्थी है। यह ब्रह्मा कहते हैं मेरे में कोई ताकत है नहीं। मेरे से भी जास्ती ताकत तो इन बच्चों में है। तुम सभी को ज्ञान भी इन बच्चों ने दिया है। फिर उनको जिसने दिया उनसे सभी मिलने आते हो। मैं तो कोई से मिलता भी नहीं हूँ। इतने सभी को तो तुम बच्चों ने ही लाया है ना। जो सच्चे मददगार हैं वही ऊँच पद पावेंगे। तो सद्गुरु कोई मनुष्य को नहीं कहा जाता। तुमको सद्गुरु पढ़ाते हैं। तुमको सद्गुरु पढ़ाते हैं। वह निराकार है। यह नहीं पढ़ाते हैं। जो अपने को गुरु कहलाते हैं वह हैं महान भ्रष्टाचारी। कुत्ते–बिल्ले सबमें ईश्वर है। तो फिर उनको भ्ह(भी) श्री–2 कहो। ठिक्कर–भित्तर सबमें परमात्मा है। अच्छा, कुत्ते, बिल्ले, ठिक्कर, भित्तर को याद करेंगे। कितनी मूर्खता है। तब बाप कहते हैं बड़े ते बड़े असुर हैं। जिन पर फिर असुर लोग ही फिदा होते हैं। सत्या ही नाश हो जाती है। अभी बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। इसको कहा जाता है सहज याद। महाश्रषि कहते हैं शराब भी पियो, प्याज़ खा सकते हो। ऐसे लोग चल कैसे सकते। अंत में सभी फेल हो जावेंगे। तुम हो ब्रह्माकुमार–कुमारियां। कुमार–कुमारियां तो पवित्र ही होते हैं। पवित्रता का ख़्याल भी नहीं। कोई दृष्टि नहीं जानी चाहिए। बाप कहते हैं मीठे बच्चों तुम पत्थर बुद्धि इन सॉलवेन्ट बन पड़े हो। फिर सॉलवेन्ट बनो। तुम यहां (आये ही हो) का मालिक बनने। थे ज़रूर। फिर बनना है। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।